THRISSUR - 3

परंपरा और आधुनिकता की टकराहट (रुकावटें)

x ———— x

भूमिका :- प्रकृती ईश्वर का वरदान है। सभी जीव-जन्तु इसी प्रकृती की गोद मे खेलते है। इस संसार मे बहने वाली सारी नदिया यही से बहकर गुजरती है। यह हमारा प्यारा देश भी उसी ईश्वर का सृजन है। मनुष्य सबसे समझदार प्राणी है। वह अपनी बुद्धि की क्षमता से क्या-कुछ नही हासिल कर सकता। मनुष्य तो चाँद पर भी जाकर आया है। आज हम जिस आधुनिक युग मे रह रहे है, उससे काफी अलग थी परंपरागत तौर से हमारा यह देश।

परंपरागत भारत :- भारत, एक बहुत बड़ा राज्य है। जनसंख्या मे यह दूसरे स्थान पर है। हमारे इस भारत राष्ट्र को 15 अगस्त 1947 मे स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। भारत देश मे सारे व्यक्ति बड़े कायदे और कानून के साथ रहते है। रस्मो के पक्के, वादो के पक्के। सारे भारत वासी अपनी परंपरा एवं सांस्कृति को

काफी मानते है। सारे छोटे अपने से उम्र मे बड़े लोगो को आदर करते है। पुराने जमाने मे लोग रोजगारी के लिए खेतो मे काम किया करते थे। वैसे काम करके वह अपना जीवन गुजारते थे। कोई बेरोजगार ना था। सारे लोग एक जुट होकर काम करते थे इसलिए पुराने जमाने के लोग अर्थात हमारे पूर्वज काफी सेहतमंद तथा तंदुरुस्त थे। तब के बच्चे यानी की हमारे दादा, दादी माँ, बाप आदि, बाहर खेलना ज्यादा पसंद करते थे। भारत देश अपनी परंपराओ को काफी मानता है।

"अदिथी देवो भव:"

कहा जाता है की महमान के रूप मे स्वयम् भगवान हमारे घर आता है। इसलिए भारतीय लोगो के घर कोई प्रवेश करता है तो खाली पेट, या हाथ कोई वापिस नही जाता। ईश्वर भक्त कई सारे पाए जाते है और यहा अनेक मंदिर भी है। उदाहरण के तौर पर पम्प नदी के पास "शाबरीमाली" जो की केरल मे है। वहा साल भर मे कई सारे भक्त

अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए हेतु ईश्वर से प्रार्थना करने जाते हैं। हिन्दु मत के अनुसार गाय को हमारी माता माना जाता है इसलिए ही छोटी कक्षाओ से लेकर बच्चो को यह सब पढाया जाता है। भारतवासियो का यह मानना है की 'बच्चे भगवान का दूसरा रूप है' अथवा हर जगह यानी पेड, पौधा, फूल पत्थर आदि मे ईश्वर रहता है, पर आज का जमाना कुछ भिन्न है,

आधुनिक युग :- इस आधुनिक युग मे मनुष्य ने कई सारी ऊचाईयो को छुआ है। जैसे की चाँद पर सैटलैट भेजना चंद्र पर जाना, एवरेस्ट की चोटि तक पहुँचना आदि। इस युग मे तकनीकि काफी बढ चुकी है मनुष्य जो चाहे वह हासिल कर सकता है। और सबसे खास बात यह हासिल करने की कामना भी अब मनुष्य हासिल कर ही चुका है। इस युग की खास बात है की यह आधुनिक युग है। और अभी

मनुष्य ने काफी सारी खोज कर ली अब मनुष्य को आसमान की ऊचाईयाँ छूने से कोई नही रोक सकता। उन खोजो मे दूरभाष, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, आदी शामिल है। घर पर बैठे किसी दुर देश के व्यक्ति से बात-चीत करने के लिय है (मोबैइल) दूरभाष। घर बैठे-बैठे-देश मे होने वाली गरमा-गरम खबरे सुनने के लिय अखबार एंव दूरदर्शन का उपयोग होता है। गरमी लगे तो बटन दबाओ तो पंखा चालू। चुटकियो मे हिसाब निकालने के लिय कालकुलेटर। सच कहे तो हम सब मशीनो से घिरे हुय है। इस युग के बच्चे बाहर खेलना पसंद नही करते बल्कि वह घर पर अपने कमरे मे बंद फोन पर खेलना पसंद करेगें। इसलिय आज के बच्चे काफी कमजोर है। सामुहय माध्यमो पर खेलना आज के बच्चो को ज्यादा दिलचस्प लगता है।

जैसे माध्यमों की बात करे तो फेसबुक, वॉटसएप, इन्स्टा आदि को भुला नही जा सकता। इन माध्यमो पर खेलना काफी खतरनाक भी साबित हो सकता है यह बात आज कोई समझने को तयार नही है। ना जाना फेसबुक और वॉटसएप द्वारा की गई दोस्ती कितनो को ले डूबी है। फेसबुक द्वारा दोस्ती करके लडका, लडकी को लेकर भाग जाता है आखिर मे वह उस लडकी को छोडकर चला जाता है। तब अपने माता-पिता का दिल तोडकर जो लडकी भागी, उस लडके के साथ, जिसे उसने आजतक कभी देखा भी ना हो वह लडकी अपना घर और माँ-बाप का प्यार खो देती है।

और ना जाने कितनी झुठी खबरे इनमे से आती है। जैसी झुठी खबरो का प्रचार-प्रसार करने मे भी यह सोशयल मीडियास हरदम आगे रहते है। करीब आज से 6 साल

पुरानी बात है, "मैली सैरस" जो की एक मशहूर गायिका है। वह गाडी मे जा रही थी। अगले दिन अखबार मे एंव दूरदर्शन मे खबर आई की शराबी दारू पीकर ड्रैवर के गाडी चलाने के कारण उनकी गाडी की टक्कर हो गई और उस हादसे मे मैली सैरस मारी गई। इस खबर ने सारे उसके दर्शको को चौंका दिया था, पर ~~अगले दो दिन~~ बाद

इस हादसे के दो दिन बाद मैली का गाना दूरदर्शन पर लैव आ रहा था। तो यह बात यह साबित करती है की पूरी तरह से सोशयल मीडीयाज पर भरोसा नही करना चाहिए। और 8 आगस्त 2018 से जो बाढ केरल मे शुरु हुई उसके दौरान भी गलत खबरो का प्रचार होता गया जो की लोगो के मन मे भय जगाता है।

लेकिन केरल ने जिस बाढ का सामना किया उसमें कई हद तक सोशयल मिडीयाज ने भी मदद की है। जैसे की पानी भरने के कारण कई लोगो का अपने घरो से बाहर आना भी नामुमकिन हो गया था तब वाटस्एप आदि के जिपिएस सिस्टम द्वारा उन लोगो का पता लगाना आसान हो गया परन्तु आधुनिक युग मे कई गुण भी है और कई दोष भी।

परंपरा और आधुनिकता :- पंरपरागत तौर से भारत की काफी शैलियों मे आज कई सारे बदलाव आ चुके है। कपडो के बारे मे कहे तो औरते तथा लडकियाँ साडियाँ पहनना पंसद करती थी और पर इस आधुनिक युग मे लडकिया कुछ भी पहनने को तयार है जिससे उसके सुंदर से पैर दिखे। और खाने के मामले मे बात करे तो पुराने लोग घर का बना शुद्ध तैल से बनाया गया

खाना, खाना ज्यादा पसंद करते थे। परन्तु आज के बच्चे तक घर का खाना पसंद नही करते। घर मे अगर माँ देर से उठी या खाना ना बनाया हो कौरन जाएगें पास के किसी ढाबे मे या 3 स्टार होटल मे जहा का खाना काफी मैहगां आता है।

प्राकृतिक रूप से बात करे तो पुराने जमाने के घरो के आस-पास वेड़-पौधो काफी हुआ करते थे। कोई भी सब्जियाँ बाहर से खरीदने की कोई आवश्यका ना थी, कारण सब कुछ घर के बगीचे मे ही उगाया जाता था।

परन्तु आज कल कोई भी वेड पौधो लगाना पसन्द नही करता तथा उनके पास ऐसे करने का समय नही होता। आज का आधुनिक मनुष्य दुकान पे जाकर सारी चीजे खरीदना पसंद करता है और वह सब खाकर बिमार पड़ जाता है

इन सारी बातो से हमे यह समझ मे आता है कि परंपरा और आधुनिकता के बीच मे कई रुकावटे है एंव अंतर है।

उपसंहार :- हम जानते है हमारे पास भगवान का दिया हुआ सब कुछ है। हम अगर चाहे तो कुछ भी एक साथ हासिल कर सकते है। बस सबको एक जुट होकर भाई-बहनो की तरह एक दूसरे की सहायता करनी होगी।

हम सब आज देख सकते है की परंपरागत तौर तरीके आदि गायब होते जा रहे है। और आधुनिकता सभी लोगो मे बढती जा रही है। यह ठीक नही है। हमे अपनी परंपराओ को कभी भी भूलना नही चाहिए। हमारी परंपराए, तौर तरीके, रीती रिवाज आदि हमारी पहचान है। और पहचान मिटाना गैर कानून कहलाता है इसलिए हम सबको अपनी संस्कृति की रक्षा

करनी होगी। आज के छात्र-छात्रा ही तो कल के नागरिक बनेगें। तो हम सब बच्चो को मिलकर एक बड़ा कदम लेना होगा जिससे हम हमारी परंपराओं को आधुनिकता के साथ ही उपयोग कर सके। जिससे परंपरा और आधुनिकता के बीच मे कोई रुकावट ना आए।

कोई कहता है की "जब परंपरा का मान करोगे तब ही तुम्हे सम्मान मिलेगा तथा आधुनिकता इनसान की खोज है अथवा दूसरा नाम है"। या तो ऐसा भी कह सकते है की परंपरा और आधुनिकता एक ही सिक्के के दो चेहरे है।

× ——— ×